*Enhanced Edition
NEP 2020 Guidelines

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

अध्यापक सहायक-पुस्तिका

7

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण कक्षा-7

अध्याय-1 – भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण

(क) 1. (स), 2. (द), 3. (द), 4. (ब)।

(ख) 1. लिखित, 2. स्थानीय, 3. रोमन, 4. ध्वनि चिह्नों को लिखने, 5. दाईं, बाईं।

(ग) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✗)।

लिखित

1. भाषा के दो रूप माने जाते हैं- (अ) मौखिक भाषा तथा (ब) लिखित भाषा।
2. **मातृभाषा**- वह भाषा जिसे बालक अपने परिवार से अपनाता एवं सीखता है, मातृभाषा कहलाती है।
3. **राष्ट्रभाषा**- वह भाषा जो देश के अधिकतर नागरिकों द्वारा बोली जाती है, राष्ट्रभाषा कहलाती है। सभी देशों की अपनी राष्ट्रभाषा होती है। जैसे- भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है।

   राजभाषा- वह भाषा जिसमें देश का राजकीय काम होता है, राजभाषा कहलाती है। भारत की राजभाषा हिंदी है। भारतीय संविधान ने 22 भाषाओं को मान्यता दे रखी है।
4. **बोली**- बोली का अभिप्राय स्थानीय बोली से होता है। बोली केवल बोलचाल की भाषा होती है। इसका प्रयोग लिखने में नहीं होता है। राजस्थान की बोली राजस्थानी है।

   भाषा और बोली में अंतर- भाषा का क्षेत्र व्यापक होता है, जबकि बोली का क्षेत्र सीमित होता है। भाषा का रूप लिखित होता है, जबकि बोली का मौखिक होता है। भाषा व्याकरण-सम्मत होती है, जबकि बोली व्याकरण-सम्मत नहीं होती है।
5. भाषा की ध्वनियों को जिन लेखन-चिह्नों द्वारा प्रकट किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं। प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है, किंतु कुछ भाषाएँ भिन्न होने पर भी उनकी लिपि एक हो सकती है: जैसे- संस्कृत, हिंदी और मराठी की लिपि देवनागरी है। भाषा के लिखित रूप का आधार उस भाषा की लिपि होती है।
6. व्याकरण वह शास्त्र है, जिसके अध्ययन से शुद्ध लिखना, पढ़ना तथा बोलना आ जाता है तथा भाषिक-प्रक्रिया के विश्लेषण की सामर्थ्य विकसित होती है। व्याकरण सीखने के बाद हम भाषा को शुद्ध रूप में बोलने, लिखने, पढ़ने और समझने लगते हैं। हम भाषा के प्रयोग में कम-से-कम अशुद्धियाँ करते हैं। इस प्रकार भाषा में शुद्धता और एकरूपता बनाए रखने में व्याकरण बहुत उपयोगी है।

   व्याकरण के मुख्य रूप से तीन भाग होते हैं- (अ) वर्ण विचार, (ब) शब्द विचार तथा (स) वाक्य विचार।

वर्ण विचार- इसमें वर्णों के आकार, भेद एवं उच्चारण आदि के विषय में विस्तार से विचार किया जाता है।

शब्द विचार- इसमें शब्दों के भेद, बनावट एवं उत्पत्ति आदि के विषय में विचार किया जाता है।

वाक्य विचार- इसमें वाक्यों की रचना, भेद एवं विराम-चिह्नों आदि के विषय में विचार किया जाता है।

विविध– स्वयं कीजिए।

अध्याय - 2 : वर्ण और वर्णमाला

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (स), 4. (ब)।

(ख) 1. वर्णमाला, 2. 11, 3. 7, 4. ऊष्म, मुँह 5. नाक और मुँह।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

लिखित

(घ) 1. भाषा की छोटी-से-छोटी मूल ध्वनि, जिसके अन्य टुकड़े न हो सकें, वर्ण या अक्षर कहलाती है। जैसे- अ, आ, क्, ख् , ग् , च्, प् आदि।

2. वर्णों के क्रमिक रूप में व्यवस्थित समूह को वर्णमाला कहते हैं (अ से लेकर ह तक)।

3. 1. साँप, संगति
   2. अंगार, आँगन
   3. गाँव, गंगा
   4. सुंदरता, आँख
   5. हँसी, अंगूर

4. वर्ण-विच्छेद:
   1. दुकान – द् + उ + क् + आ + न् + अ
   2. अमरीका – अ + म् + अ + र् + ई + क + आ
   3. श्याम – श् + य् + आ + म् + अ
   4. दीवार – द् + ई + व् + आ + र् + अ
   5. स्टेशन – स् + ट् + ए + श् + अ + न् + अ

विविध प्रश्न

1. स्वयं लिखिए।
2. र् का विशेष प्रयोग- हिंदी में 'र' विशेष व्यंजन है। इसके नीचे हल् (हलंत्) चिह्न नहीं लगता है, इसलिए स्वर-रहित 'र्' को आगे वाले स्वर के ऊपर लिखा जाता है। जैसे- धर्म, कर्म, सर्प, मार्मिक, आशीर्वाद। पाई वाले व्यंजन के साथ आने पर यह पाई के निचले भाग में लगता है। जैसे- भ्रम, नम्र, प्रेरणा आदि। बिना पाई वाले व्यंजनों में यह इस रूप में लगता है। उदाहरण - ट्रेन, ट्रक, ड्रम, ड्रेस आदि।

अध्याय - 3 : शब्द-विचार

(क) 1. (ब), 2. (ब), 3. (अ), 4. (ब)।

(ख) 1. तत्सम, 2. योगरूढ़, 3. रेल, गाड़ी 4. अविकारी, 5. निश्चित।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✗)।

लिखित

1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। जैसे- कलम, हाथी, लड़का आदि।
2. **तत्सम शब्द :** वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में बिना किसी बदलाव (मूल रूप में) के लिए गए हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं। जैसे- अक्षि, ग्राम, चंद्र, गृह, क्षेत्र आदि।

   तद्भव शब्द : वे शब्द जो संस्कृत भाषा से हिंदी भाषा में कुछ परिवर्तन के साथ लिए गए हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं। जैसे- घर, खेत, आँख, गाँव, चाँद आदि।
3. **देशज शब्द :** वे शब्द जो देशी बोलियों या क्षेत्रीय भाषाओं के प्रभाव के कारण हिंदी भाषा में लिए गए हैं, उन्हें देशज शब्द कहते हैं। जैसे- खटिया, जूता, पेटी, खिचड़ी, डिब्बा, लोटा, झोला, पगड़ी, रोटी एवं पतीला आदि।

   विदेशी शब्द : जो शब्द विदेशी भाषाओं से हिंदी भाषा में लिए गए हैं, वे विदेशज या विदेशी शब्द कहलाते हैं। जैसे- पेन, पेंट, स्कूल, कैंची आदि।
4. **संकर शब्द :** हिंदी के जो शब्द दो अलग-अलग भाषाओं के शब्दों के योग से बने हैं, उन्हें सकंर शब्द कहा जाता है। जैसे- रेलगाड़ी = रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिंदी)
   डाकखाना = डाक (हिंदी) + खाना (फारसी)

विविध

(क) अपनी पाठ्य-पुस्तक में से पाँच तत्सम शब्द छाँटिए। उनकी जगह उनका तद्भव शब्द लिखकर वाक्य बनाइए।

तत्सम	तद्भव	वाक्य
ग्राम	गाँव	आज मुझे अपने गाँव जाना है।
मयूर	मोर	मोर नाज रहा है।
रात्रि	रात	रात में आकाश में तारें दिखाई देते हैं।
कपोत	कबूतर	कबूतर पेड़ पर बैठा है।
सूर्य	सूरज	सूरज पूर्व से निकलता है।

(ख) तत्सम – सर्प, उष्ट्र, स्वर, हस्ती, चटका, सप्त, कूप
तद्भव – हँसी, सपना, लोहार, अंधा, हाथी, मानव

अध्याय – 4 : उपसर्ग

(क) 1. ब, 2. स, 3. स, 4. स।

(ख) 1. तत् = संस्कृत 2. बद = (उर्दू)
3. कु = हिंदी 4. अंतः = (संस्कृत)
5. परि = संस्कृत 6. निर् = (संस्कृत)

(ग) 1. अध = अधपका, अधखिला 2. सम् = संतोष, संहार
3. गैर = गैर-हाजिर, गैर-हाज़िर 4. सत् = सत्कर्म, सत्पुरुष
5. परि = परीक्षा, परिचय 6. अन् = अनाचार, अनादर
7. प्रति = प्रतिकूल, प्रत्येक

(घ) 1. प्राक् 2. अति 3. सह् 4. प्रति 5. अलम्
6. तिर् 7. सम् 8. परि 9. प्र 10. आ

(ङ) 1. जो शब्दांश शब्दों से पहले जुड़कर उनका या तो अर्थ बदल देते हैं अथवा अर्थ में विशिष्टता उत्पन्न कर देते हैं, वे 'उपसर्ग' कहलाते हैं।
2. निम्नलिखित भाषाओं के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं:
(i) संस्कृत (ii) हिंदी (iii) उर्दू (iv) अंग्रेजी

विविध : छात्र स्वयं करें।

अध्याय – 5 : प्रत्यय

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (द), 4. (ब)।

(ख) 1. अर्थ, परिवर्तन, 2. सर्वनाम, अंत,
3. प्रत्यय, का बोध, कर्तृवाचक कृत, 4. भाववाचक।

(ग)

प्रत्ययुक्त शब्द	**प्रत्यय**	**नया शब्द**	**नया शब्द**
घबराहट	आहट	लँगड़ाहट	फड़फड़ाहट
देवरानी	आनी	जेठानी	सेठानी
लकड़हारा	हारा	सर्वहारा	पालनहारा

(घ)

प्रत्ययुक्त शब्द	**प्रत्यय**	**प्रथम शब्द**	**द्वितीय शब्द**
1. पूजनीय	अनीय	गोपनीय	पठनीय
2. मुखिया	इया	दुखिया	सुखिया
3. लुहार	आर	सुनार	कुम्हार

(ङ)

शब्द	**प्रत्यय**	**कृदंत**	**तद्धित**
1. बिकाऊ	आऊ	कृदंत	———
2. झूला	आ	कृदंत	———
3. डिबिया	इया	———	तद्धित
4. रसोइया	इया	———	तद्धित
5. चटखनी	नी	कृदंत	———

लिखित

(च) इनके उत्तर लिखिए-

1. जो शब्दांश शब्दों के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता या परिवर्तन कर देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं। जैसे- दिन + इक = दैनिक , दया + आलु = दयालु।
2. कृत् प्रत्यय: जो प्रत्यय धातु से जुड़कर संज्ञा, विशेषण आदि शब्द बनाते हैं, उन्हे कृत् प्रत्यय कहते हैं।

   उदाहरण: भूल + अक्कड़ – भुलक्कड़

   लिख + आई – लिखाई

   तद्धित प्रत्यय: जो प्रत्यय क्रिया से भिन्न शब्दों के अंत में जुड़ते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

   उदाहरण: मीठा + आस – मिठास

   बंगाल + ई – बंगाली

3. (i) ✗ (ii) ✓ (iii) ✗

विविध

बॉक्सों में प्रत्ययों का प्रयोग करके शब्द बनाइए-

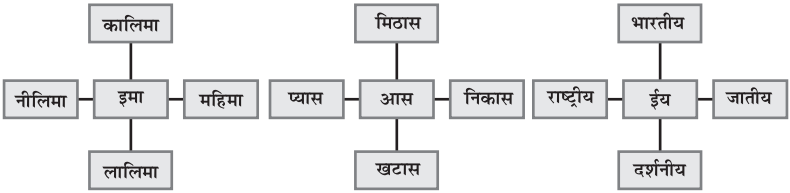

अध्याय - 6 : समास

(क) 1. (ग), 2. (क), 3. (ग), 4. (घ)।

(ख)	भरपेट	=	पेट भरकर	=	अव्ययीभाव समास
	पाप-पुण्य	=	पाप और पुण्य	=	द्वंद्व समास
	दाल-रोटी	=	दाल और रोटी	=	द्वंद्व समास
	त्रिलोक	=	तीन लोकों का समाहार	=	द्विगु समास
	सेनापति	=	सेना का पति	=	तत्पुरुष समास
	दशानन	=	दस हैं आनन जिसके	=	बहुव्रीहि समास
	आजन्म	=	जन्म से लेकर	=	अव्ययीभाव समास

(ग)

1. वन में वास	=	वनवास	=	तत्पुरुष समास
2. नीले रंग की गाय	=	नील गाय	=	कर्मधारय समास
3. मार्ग के लिए व्यय	=	मार्गव्यय	=	तत्पुरुष समास
4. राधा और कृष्ण	=	राधा कृष्ण	=	द्वंद्व समास
5. जन्म भर	=	आजन्म	=	अव्ययीभाव समास
6. हिम का आलय	=	हिमालय	=	तत्पुरुष समास
7. पाँच वटियों का समूह	=	पंचवटी	=	द्विगु समास
8. भाई और बहन	=	भाई बहन	=	द्वंद्व समास
9. रात-ही-रात में	=	रातोंरात	=	अव्ययीभाव समास

लिखित

(घ) इनके उत्तर दीजिए-

1. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।
2. समास के छह भेद होते हैं-
   (क) अव्ययीभाव समास, (ख) तत्पुरुष समास, (ग) द्विगु समास,
   (घ) द्वंद्व समास, (ङ) कर्मधारय समास, (च) बहुव्रीहि समास
3. द्विगु समास : द्विगु समास में पूर्व पद संख्यावाची होता है। इसमें विग्रह करते समय समाहार या समूह शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समस्त पद**	**समास-विग्रह**
नवग्रह	नौ ग्रहों का समूह	तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
त्रिवेणी	तीन वेणियों का समाहार	त्रिभुवन	तीन भुवनों का समाहार

   द्वंद्व समास : द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। इसमें पूर्व पद तथा उत्तर पद को जोड़ने वाले योजक शब्द जैसे-और, तथा, या, व, एवं, अथवा आदि शब्दों का लोप हो जाता है। जैसे-

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समस्त पद**	**समास-विग्रह**
माता-पिता —	माता और पिता	भाई-बहन —	भाई और बहन
यश-अपयश —	यश और अपयश	घर-बाहर —	घर और बाहर

4. कर्मधारय समास में दूसरा पद प्रधान होता है। पूर्वपद विशेषण या उपमान का काम करता है, जबकि बहुव्रीहि में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे अर्थ की ओर संकेत करते हैं। उदाहरण-

समस्त पद	**समास विग्रह**	
पीतांबर —	पीला अंबर (वस्त्र)	(कर्मधारय)
पीतांबर —	पीला अंबर (वस्त्र) है जिसका, अर्थात् श्री कृष्ण	(बहुव्रीहि)

विविध

(क) निम्नलिखित प्रत्येक प्रकार के समास के दो उदाहरण लिखिए–

तत्पुरुष = अकालपीड़ित, जीवनसाथी

कर्मधारय = चरणकमल, मालगाड़ी

अव्ययीभाव = यथासंभव, आमरण

द्वंद्व = यश–अपयश, जीवन–मृत्यु

(ख)

	समस्त पद	द्विगु	बहुव्रीही
1.	दशानन	दस आनन का समूह	दस हैं आनन जिसके, अर्थात् – रावण
2.	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह	चार भुजाएं है जिसकी, अर्थात् – ब्रह्मा
3.	पंचानन	पांच आनन का समूह	पाँच हैं आनन जिसके, अथार्त् – शिव
4.	पंचवटी	पांच वटों का समूह	पांच है वट जिसके
5.	त्रिलोचन	तीन लोचनो का समूह	तीन लोचन है जिसके, अर्थात् – शिव

अध्याय – 7 : संधि

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (स), 4. (ब)।

(ख) 1. मेल, स्वर, 2. स्वर, व्यंजन, 3. संयोग से, उत्पन्न, संधि, 4. अयादि, 5. अलग होना।

(ग) निम्नलिखित शब्दों में संधि कीजिए–

नर	+ इंद्र	= नरेंद्र		महा	+ ऐश्वर्य	= महैश्वर्य	
पौ	+ अन	= पावन		गै	+ अक	= गायक	
पर	+ उपकार	= परोपकार		अभि	+ इष्ट	= अभीष्ट	
भो	+ अन	= भवन		परीक्षा	+ अर्थी	= परीक्षार्थी	
ने	+ अन	= नयन		अधिक	+ अधिक	= अधिकाधिक	

(घ)

चयन	= चे + अन	अत्युत्तम	= अति + उत्तम
वेदांत	= वेद + अंत	लघूर्जा	= लघु + ऊर्जा
अत्यधिक	= अति + अधिक	कोणार्क	= कोण + आर्क

सूक्ति	=	सु	+	उक्ति	यद्यपि	=	यदि	+	अपि
जलौध	=	जल	+	औध	तथैव	=	तथा	+	एव

लिखित

(ङ) 1. हिंदी में संधि की आवश्यकता भाषा को सरल व स्पष्ट बनाने के लिए होती है।

2. दो वर्णों के परस्पर मेल से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।
   जैसे– देव + आलय = देवालय दे + व् + अ + आ + लय
   यहाँ देव शब्द के 'अ' व आलय शब्द के ' आ ' में संधि हुई है।

3. **संधि-विच्छेद :** संधि-विच्छेद का अर्थ है-अलग होना। दो वर्णों के मेल से बने शब्द को अलग-अलग करना संधि-विच्छेद कहलाता है।
   जैसे- विद्यालय = विद्या + आलय नमस्ते = नमः + ते

4. संधि के तीन भेद होते हैं- 1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।
   (क) स्वर संधि- दो निकटवर्ती स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे- दीप + अवली = दीपावली
   (ख) व्यंजन संधि- व्यंजन के आगे स्वर या व्यंजन आने से जो संधि होती है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं: जैसे- जगत् + ईश = जगदीश।
   (ग) विसर्ग संधि- विसर्ग के आगे स्वर या व्यंजन आने पर विसर्गों में जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।
   निः + वात = निर्वात निः + धन = निर्धन

5. **(क) स्वर संधि**- दो निकटवर्ती स्वरों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे- दीप + अवली = दीपावली
   (ख) व्यंजन संधि- व्यंजन के आगे स्वर या व्यंजन आने से जो संधि होती है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं: जैसे- जगत् + ईश = जगदीश।

विविध

(क) निम्नलिखित शब्दों की संधि करके उनका भेद लिखिए-

सु	+	आगत	=	स्वागत	=	यण संधि
महा	+	उत्सव	=	महोत्सव	=	गुण संधि
सत्य	+	आग्रह	=	सत्याग्रह	=	दीर्घ संधि
इति	+	आदि	=	इत्यादि	=	यण संधि
यदि	+	अपि	=	यद्यपि	=	यण संधि
देव	+	ऋषि	=	देवर्षि	=	गुण संधि
सुर	+	इंद्र	=	सुरेंद्र	=	गुण संधि
नमः	+	कार	=	नमस्कार	=	विसर्ग संधि

(ख) 1. दीर्घ संधि आयत + आकार

2. व्यंजन संधि — जगत् + नाथ
3. वृद्धि संधि — एक + एक
4. गुण संधि — परम + ईश्वर
5. यण् संधि — सु + आगत
6. अयादि संधि — मौ + इक
7. विसर्ग संधि — दुः + कर

अध्याय - 8 : शब्द-भंडार

अभ्यास (पृष्ठ 56)

(क) 1. महात्मा, नहर 2. अपकीर्ति 3. विपिन
4. श्याम, मरीचि 5. सुता

(ख) 1. पत्थर – शिला, पाषाण 2. आभूषण – अलंकार, भूषण
3. इच्छा – अभिलाषा, कामना 4. देवता – सुर, देव
5. पर्वत – पहाड़, नग

(ग)

नदी	–	सरिता	आँख	–	दृग
बंदर	–	कपि	वृक्ष	–	विटप
मेघ	–	वारिद	पृथ्वी	–	धरा
सोना	–	कंचन	वायु	–	समीर

अभ्यास (पृष्ठ 58)

(क) 1. उदय 2. सरल 3. संतोषी 4. बुरा 5. अभिशाप

(ख)

आहार	–	निराहार	नीरस	–	सरस
अल्पायु	–	दीर्घायु	प्रत्यक्ष	–	परोक्ष
ऐच्छिक	–	अनैच्छिक	अर्थ	–	अनर्थ

(ग) छात्र स्वयं करें।

अभ्यास (पृष्ठ 60)

(क) 1. दूरदर्शी 2. अजर 3. गगनचुम्बी 4. सहपाठी 5. जिज्ञासु
6. वैयाकरण 7. सुगम 8. आस्तिक

(ख) 1. क 2. ख 3. ग 4. घ 5. ग

(ग) 1. अनियमित 2. कटुभाषी 3. अपराजेय 4. अकथनीय
5. औपचारिक 6. वाचस्पति

अभ्यास (पृष्ठ 62)

(क) 1. आकाश 2. चाल 3. हाथ 4. अवसर 5. शरीर

(ख) जलज – कमल, मोती, शंख
वर्ण – रंग, अक्षर, रूप
काल – समय, मृत्यु, यमराज
पत्र – पत्ता, चिट्ठी, पंख
कनक – सोना, गेहूँ, धतूरा

(ग) अग्र – सिरा, श्रेष्ठ, पहला
उत्सर्ग – त्याग, दान, समाप्ति
गुरू – शिक्षक, बड़ा, चालाक
अर्थ – धन, प्रयोजन, ऐयवर्य
पतंग – कीड़ा, सूर्य, नौका
मत – राय, वोट, नहीं
तात – पूज्य, भाई, मित्र
नाग – हाथी, पर्वत, साँप

अभ्यास (पृष्ठ 64)

(क) 1. ध 2. ख 3. ख 4. क 5. ख

(ख) 1. मैं और मोहन नियत समय पर वहाँ पहुँच जाँएंगें।
2. वह तो झूठ बोलने का आदी है।
3. आज बहुत शीतल अनिल चल रही है।
4. अजंता के भित्ति चित्र देखते ही बनते हैं।
5. नींबू का अचार बहुत स्वादिष्ट है।

(ग) 1. अंबर – आकाश – आज अंबर बहुत साफ है।
अंबार – ढेर – यहाँ वस्त्रों का अंबार लगा है।
2. जलज – कमल – जल में तैरते जलज सुंदर लगते हैं।
जलद – बादल – जलद के घिर आने से किसान बहुत प्रसन्न हैं।

3. ग्रह – ग्रह – सौर मंडल में 8 ग्रह हैं।
गृह – घर – आलोक ने गृह-प्रवेश की पूजा रखी है।

4. अणु – कण – अणु परमाणु से सुक्ष्म होता है।
अनु – पीछे

5. वरण – चुनना – सीता ने राम को अपने पति रूप में वरण किया।
वर्ण – अक्षर – भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कहलाती है।

अभ्यास कार्य (पृष्ठ 65)

(क) 1. स 2. अ 3. ब 4. अ

(ख) 1. स 2. द 3. य 4. अ 5. ब

(ग) गणेश – विनायक, गजानन
लक्ष्मी – रमा, पद्मा
रात – रात्रि, रजनी
झंडा – ध्वज, पताका

(ध) 1. द 2. य 3. अ 4. ब 5. स

(ङ) 1. जलद – मेघ
जलज – कमल
2. द्रव – तरल पदार्थ
द्रव्य – धन
5. चरण – पैर
चारण – भाट
2. कोस – दूरी का नाम
कोष – खज़ाना
4. अरि – शत्रु
अरी – स्त्री के लिए संबोधन
6. अपेक्षा – इच्छा
उपेक्षा – अनादर

(च) 1. शंका – वर्तमान में होने वाला अमंगल।
आशंका – भविष्य में होने वाला अमंगल।
2. अस्त्र – दुश्मन पर फेंका जाने वाला हथियार।
शस्त्र – हाथ में पकड़कर प्रहार किए जाने वाला हथियार।
3. द्वेष – अपना प्रतिद्वंद्वी समझकर घृणा करना।
ईर्ष्या – दूसरे की उन्नति देखकर बेचैन होना।

(छ) 1. ऐसे शब्द जो एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग में आकर समान अर्थ देते हैं, वे 'पर्यायवाची शब्द' कहलाते है।

2. जो शब्द परस्पर विपरीत अर्थ प्रकट करें, वे 'विलोम शब्द' कहलाते है।
3. वह संक्षिप्त शब्द जो वाक्यांश अथवा अनेक संबद्ध शब्दों के शीर्षक का कार्य करता है, 'वाक्यांश के लिए एक शब्द' कहलाता है।
   उदाहरण – हित चाहने वाला — हितैषी
4. कुछ शब्दों के प्रसंगानुसार अनेक अर्थ होते हैं, 'अनेकार्थी शब्द' कहलाते है।
   उदाहरण: वर्ण — अक्षर, रंग, जाति।
5. ऐसे शब्द जो उच्चारण की दृष्टि से सूक्ष्म अंतर रखते हैं, 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' कहलाते हैं।

   उदाहरण: कुल — वंश, सबकूल — किनारा

विविध

1. पृथ्वी — धरा, धरित्री, अचला
2. छात्र स्वयं करें।

अध्याय - 9 : संज्ञा

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (अ), 4. (अ)।

(ख) 1. जातिवाचक, 2. पदार्थवाचक, 3. अगणनीय, 4. भाववाचक।

(ग) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

लिखित

(घ) 1. (*i*) भालू, तोता (*ii*) कोयल, चिड़िया

2. संज्ञा के पाँच भेद है- (अ) व्यक्तिवाचक, (ब) जातिवाचक, (स) भाववाचक, (द) द्रव्यवाचक व (य) समूहवाचक।
3. **जातिवाचक संज्ञा**- जिन संज्ञा शब्दों से उनकी संपूर्ण जाति का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- घर, पुस्तक, मेज, कुर्सी, चूहा, बिल्ली, शेर, चिड़िया, मोर, गाय आदि।

   व्यक्तिवाचक संज्ञा- जिस संज्ञा से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान या वस्तु के नाम का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे-सुरेश, दिनेश, राम, गीता, जयपुर, मेरठ, हिमालय, गंगा, यमुना, रामायण आदि।
4. **भाववाचक संज्ञा**- जिन संज्ञा शब्दों से पदार्थ की अवस्था, गुण, दशा, धर्म एवं भाव आदि का बोध हो, वे भाववाचक संज्ञाएँ होती हैं। जैसे- मिठास, बचपन, चिकनाहट, स्वतंत्रता, बुढ़ापा आदि।

5. भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित शब्दों से बनाई जाती हैं- (अ) जातिवाचक संज्ञा से, (ब) सर्वनाम से, (स) विशेषण से, (द) क्रिया से, (य) अव्यय से।

6. (*i*) भाववाचक संज्ञा
   (*ii*) व्यक्तिवाचक संज्ञा
   (*iii*) जातिवाचक संज्ञा
   (*iv*) जातिवाचक संज्ञा
   (*v*) भाववाचक संज्ञा

विविध

वर्ग-पहेली में से भाववाचक संज्ञा पर गोला बनाइए:-

मि	र	ज	ल	मू	व	ल	ह
त्र	ग	ड	छ	र्ख	मि	श	द
बे	मा	न	व	ता	ठा	क्ष	अ
प	न	स	क	दा	स	ष	छा
दे	व	त्व	स	वे	क	मा	ई
दा	न	ल	ह	रि	या	ली	घा
वि	बा	ल	क	प	न	क	इ
पु	ख	स	त	भ	म	हँ	सी

अध्याय - 10 : संज्ञा-विकार : लिंग

(क) 1. (ब), 2. (अ), 3. (ब), 4. (अ)।

(ख) 1. पुरुष (नर), 2. आइन, 3. स्त्रीलिंग, 4. स्त्रीलिंग, 5. पुल्लिंग।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✓)।

लिखित

(घ) 1. लिंग संज्ञा का वह लक्षण है, जो संज्ञा के पुरुष जाति या स्त्री जाति होने का बोध कराता है। लिंग संस्कृत भाषा का शब्द है, इसका अर्थ होता है- चिह्न या निशान।

2. **पुल्लिंग**- संज्ञा शब्द के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं; जैसे- छात्र, अध्यापक, सेठ, घोड़ा, शेर, बंदर आदि।

3. **स्त्रीलिंग**- संज्ञा शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे- छात्रा, अध्यापिका, सेठानी, घोड़ी, शेरनी, बंदरिया आदि।

(ङ)

छात्रा	=	स्त्रीलिंग	देव	=	पुल्लिंग
धोबी	=	पुल्लिंग	सम्राट	=	पुल्लिंग

	ग्वालिन	=	स्त्रीलिंग	यशवती	=	स्त्रीलिंग
	भीलनी	=	स्त्रीलिंग	खरगोश	=	पुल्लिंग
	आयुष्मान	=	पुल्लिंग			
(च)	भील	=	भीलनी	दास	=	दासी
	बेटा	=	बेटी	बुद्धिमान	=	बुद्धिमती
	सिंह	=	सिंहनी	विद्वान	=	विदुषी
	लेखक	=	लेखिका	मोर	=	मोरनी
	कवि	=	कवयित्री			
(छ)	श्रीमती	=	श्रीमान	बेगम	=	बादशाह
	युवती	=	युवक	मादा	=	नर
	अध्यापिका	=	अध्यापक	सेठानी	=	सेठ
	भवदीया	=	भवदीय	क्षत्राणी	=	क्षत्रिय
	चिड़िया	=	चिड़ा			

विविध

स्वयं कीजिए।

अध्याय - 11 : संज्ञा-विकार : वचन

(क) 1. (ब), 2. (स), 3. (द), 4. (द)।

(ख) 1. वचन, 2. बहुवचन, 3. कुटियाँ, 4. कोयलें, 5. कर्मचारी।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✗), 4. (✓), 5. (✓)।

(घ)	कोयल	=	एकवचन	खिड़कियाँ	=	बहुवचन
	रातें	=	बहुवचन	पाठक	=	एकवचन
	कविगण	=	बहुवचन	कन्या	=	एकवचन
	पक्षीवृंद	=	बहुवचन	गाड़ियाँ	=	बहुवचन
	डिबिया	=	एकवचन	हमलोग	=	बहुवचन
	आँसू	=	एकवचन	थोड़ा	=	एकवचन
(ङ)	दाल	=	दालें	कमरा	=	कमरे
	चुहिया	=	चुहियाँ	गौ	=	गौएँ

दीवार	=	दीवारें	लड़की	=	लड़कियाँ
खग	=	खगवृंद	कुर्सी	=	कुर्सियाँ
मुनि	=	मुनिगण	कविता	=	कविताएँ
बच्चा	=	बच्चे	सैनिक	=	सैनिकदल
छत	=	छतें	वधू	=	वधुएँ
नर्तक	=	नर्तकगण	वस्तु	=	वस्तुएँ
आप	=	आपलोग	घड़ा	=	घड़े
पुड़िया	=	पुड़ियाँ	मंत्री	=	मंत्रीगण

लिखित

(च) 1. शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

2. **एकवचन**- शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का पता चले, उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-लड़का, लड़की, कपड़ा, घोड़ा, थाली एवं पुस्तक आदि।
बहुवचन-शब्द के जिस रूप से उसके अनेक होने का ज्ञान हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-लड़के, लड़कियाँ, कपड़े, घोड़े, थालियाँ एवं पुस्तकें आदि।

विविध

एकवचन	बहुवचन	वाक्य प्रयोग
लड़का	लड़के	लड़के फुटबॉल खेल रहे हैं।
कपड़ा	कपड़े	धोबी धो रहा है।
घोड़ा	घोड़े	घोड़े घास चर रहे हैं।
केला	केले	मेरे पिताजी दो दर्जन केले लाए।
बच्चा	बच्चे	बच्चे शोर मचा रहे थे।

अध्याय - 12 : संज्ञा-विकार : कारक

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (द), 4. (द), 5. (द)।

(ख) 1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

(ग) 1. अधिकरण कारक, 2. करण कारक, 3. संप्रदान,
4. संबोधन कारक, 5. संबंध कारक।

(घ) 1. अपादान कारक, 2. अधिकरण कारक, 3. अधिकरण कारक,
4. अपादान कारक, 5. कर्ता कारक।

लिखित

(ङ) 1. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सीधा संबंध क्रिया-पद के साथ प्रकट होता है, वह रूप कारक कहलाता है। जैसे- श्रीकृष्ण ने कंस को मारा था। वाक्य में 'मारा था' क्रिया को करने वाले 'श्रीकृष्ण' कर्ता तथा 'मरने वाला' 'कंस' कर्म है और दोनों ही कारक पद हैं। कहीं-कहीं यह विभक्ति छिपी रहती है।

2. **परसर्ग या विभक्ति**- कारक का ज्ञान कराने वाले चिह्नों को विभक्ति या कारक कहते हैं; जैसे- ने, को, से, के लिए, का, पर आदि। विभक्ति के संबंध के आधार पर आठ भेद होते हैं। नीचे कारक और उनकी विभक्तियाँ दी गई हैं-

कारक	विभक्ति	पहचान
1. कर्ता	ने, से, के द्वारा, को, में, शून्य	किसने, कौन
2. कर्म	को, शून्य	किसको, क्या
3. करण	से, के द्वारा	किससे, किसके द्वारा
4. संप्रदान	को, के लिए	किसको, किसके लिए
5. अपादान	से (अलग होना)	कहाँ से
6. संबंध	का, के, की, रा, रे, री	किसका, किसको, किसकी
7. अधिकरण	में, पर	किसमें, किस पर
8. संबोधन	हे!, अरे	अरे! कौन

3. कारक के आठ भेद होते हैं-

***(i)* कर्ता कारक :** कर्ता का अर्थ है- करने वाला। संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का पता चलता है, उसे कर्ता कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न ने होता है। जैसे-(क) नेता ने भाषण दिया। (ख) नेहा ने फ्रॉक सिला।

***(ii)* कर्म कारक :** क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'को' होता है। जैसे-

(क) अध्यापक ने छात्र को पढ़ाया। (ख) माता ने बच्चे को खाना खिलाया।

***(iii)* करण कारक :** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है, वह करण कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' एवं 'के द्वारा' होता है। जैसे-

(क) रवि पेन से लिखता है। (ख) माताजी कैंची से कपड़े काट रही हैं।

***(iv)* संप्रदान कारक :** जिसके लिए क्रिया की जाती है या कर्ता द्वारा किसी को कुछ दिया जाए या किसी के लिए कुछ किया जाए, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'के लिए' या 'को' होता है। जैसे-

(क) नेहा सहेली के लिए उपहार लाई। (ख) चाचा जी मेरे लिए घड़ी लाए।

(v) अपादान कारक : संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिसके द्वारा अलग होने का बोध होता है, वह अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'से' होता है। जैसे-

(क) वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। (ख) विपिन कमरे से बाहर आ गया।

***(vi)* संबंध कारक :** संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किन्हीं दो वस्तुओं या व्यक्तियों के परस्पर संबंध का पता चलता है, उन्हें संबंध कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'का', 'के', 'की', 'रा', 'रे', 'री' तथा 'ना', 'ने', 'नी' होता है। जैसे-

(क) यह मेरा घर है। (ख) रवि की बहन लता है।

***(vii)* अधिकरण कारक :** संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसका विभक्ति चिह्न 'में' या 'पर' होता है। जैसे-

(क) आकाश में तारे चमक रहे हैं। (ख) पेड़ पर चिड़िया बैठी है।

***(viii)* संबोधन कारक :** संज्ञा के जिस रूप से किसी को पुकारने या संबोधित करने का बोध होता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न 'हे', 'अरे' आदि होते हैं। जैसे-

(क) हे प्रभु! हमारी रक्षा कीजिए। (ख) अरे! अंदर बैठकर पढ़ो।

4. **करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर**- दोनों ही कारकों में 'से' विभक्ति चिह्न का प्रयोग किया जाता है; परंतु दोनों में अंतर होता है।
   - करण कारक के माध्यम से कर्ता काम करता है।
   - अपादान कारक से अलग होने का भाव होता है।

   वह कार से घर गया है। (करण कारक)
   वह घर से चला गया। (संप्रदान कारक)
5. कर्म कारक में अंतर और संप्रदान कारक - दोनों ही कारकों में 'को' परसर्ग का प्रयोग होता है; फिर भी दोनों में अंतर होता है।
   - कर्म कारक में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है।
   - संप्रदान कारक में कर्ता देने का कार्य करता है। जैसे-

   कृष्ण ने कंस को मारा। (कर्म कारक)
   माँ ने भिखारी को भोजन दिया। (संप्रदान कारक)

विविध

कारक के भेद	विभक्ति चिह्न	प्रभाव	वाक्य
1. कर्ता	ने	क्रिया को करने वाला।	सुमित ने पाठ पढ़ा।
2. कर्म	को	जिस पर क्रिया का फल पड़े।	भिखारी को भोजन दो।

3. करण	से/के द्वारा	वह साधन जिससे क्रिया होती है।	पिताजी कार से आए।
4. संप्रदान	के लिए, को	जिसके लिए कार्य हो।	वह मेरे भाई के लिए फल लाए।
5. अपादान	से, अलग होना	जिससे अलग होने का भाव प्रकट हो।	पेड़ से पत्ता गिरा।
6. संबंध	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी	संबंध प्रकट करने के लिए।	सोनू की कार सुंदर है।
7. अधिकरण	में, पर	क्रिया करने का स्थान।	रमेश कमरे में बैठा है।
8. संबोधन	हे, अरे आदि	संबोधित किया जाना।	हे भगवान! सभी की रक्षा करो।

अध्याय - 13 : सर्वनाम

(क) 1. (स), 2. (अ), 3. (अ), 4. (अ)।

(ख) 1. वह, 2. कुछ, 3. कोई, 4. मैं, 5. वे।

(ग) 1. (✓), 2. (✗), 3. (✗), 4. (✓),

लिखित

(घ) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे-

निम्नलिखित अनुच्छेद को देखिए-

अंकुर एक अच्छा लड़का है।

अंकुर कक्षा-7 में पढ़ता है।

अंकुर के अध्यापक और मित्र अंकुर से खुश रहते हैं।

अंकुर कभी किसी से झगड़ा नहीं करता है।

अंकुर अपने-से बड़ों तथा गुरुओं का सम्मान करता है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अंकुर' संज्ञा शब्द का बार-बार प्रयोग हुआ है, जो कि अटपटा लगता है।

इन वाक्यों को अब इस रूप में देखिए-

अंकुर एक अच्छा लड़का है। वह कक्षा-7 में पढ़ता है। उसके अध्यापक और मित्र

उससे खुश रहते हैं। वह कभी किसी से झगड़ा नहीं करता है। वह अपने-से बड़ों तथा गुरुओं का सम्मान करता है।

आपने देखा कि संज्ञा शब्द अंकुर के स्थान पर 'वह, उसके, उससे, अपने' शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिससे भाषा सुंदर एवं स्पष्ट बन गई है।

2. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन उपभेद होते हैं-

(अ) उत्तम पुरुष- (क) मैं - मैं प्रतिदिन व्यायाम करता हूँ।

(ख) हम - हम अपने से बड़ों का आदर करते हैं।

(ब) मध्यम पुरुष- (क) तुम - तुम क्या कर रहे हो?

(ख) आप - आप कहाँ जा रहे हैं?

(स) अन्य पुरुष (क) वह - वह नवीन है।

(ख) वे - वे खेलने जाएँगे।

3. (अ) कोई - दरवाजे कोई खड़ा है। (ब) कुछ - उसे कुछ रुपए दे दो।

4. **निजवाचक सर्वनाम**- जिस सर्वनाम का प्रयोग कर्ता के रूप में स्वयं (निजत्व) को बताने के लिए किया जाता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहा जाता है; जैसे - आप, खुद, स्वयं आदि।

विविध

चार-चार उदाहरण लिखिए-

पुरुषवाचक सर्वनाम	-	हम, तुम, वे, आप
निजवाचक सर्वनाम	-	खुद, स्वयं, अपनेआप, आप
प्रश्नवाचक सर्वनाम	-	क्या, कौन, कहाँ, किसने
अनिश्चयवाचक सर्वनाम	-	कोई, कुछ, किसी, किन्हीं।

अध्याय - 14 : विशेषण

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (ब), 4. (ब)।

(ख) 1. तोल, परिमाण, 2. गुणवाचक, 3. सर्वनाम, पूछताछ, प्रश्नवाचक सार्वनामिक, 4. प्रविशेषण।

(ग) 1. (✗), 2. (✓), 3. (✓), 4. (✗), 5. (✗)।

(घ)

रंग	= रंगीन	भूख	= भूखा	नाटक	= नाटकीय
स्वर्ग	= स्वर्गीय	आज्ञा	= आज्ञाकारी	व्यवसाय	= व्यावसायिक
सेना	= सैन्य	मूल	= मौलिक	परिश्रम	= परिश्रमी
शक्ति	= शक्तिशाली				

(ङ) 1. विशेषण का शाब्दिक अर्थ है–विशेषता उत्पन्न करने वाला या विशेषक। जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताए, उसे विशेषण कहते हैं।

विशेष्य–विशेषण शब्द जिन शब्दों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। जैसे– चालीस चोर पकड़े गए।

उपर्युक्त वाक्य में 'चालीस' शब्द विशेषण है तथा 'चोर' शब्द विशेष्य है। जैसे– वह नीली कमीज पहनती है।

इस वाक्य में कमीज की विशेषता बताई गई है, इसलिए यहाँ कमीज विशेष्य तथा नीली विशेषण है।

2. विशेषण के मुख्यत: चार भेद माने जाते हैं- गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक और सार्वनामिक।

(अ) गुणवाचक विशेषण- जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दशा, रंग एवं आकार आदि का बोध कराते हैं, वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे- मीठा, कठोर, उपयोगी, अच्छा, बुरा, पतला, मोटा, नीला, छोटा, नुकीला, ऊँचा आदि।

(ब) संख्यावाचक विशेषण- संज्ञा या सर्वनाम की संख्या संबंधी विशेषता बताने वाले शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे- (क) उसने दो सेब खाए। (ख) उसकी कक्षा में दस छात्र हैं।

(स) परिमाणवाचक विशेषण- संज्ञा या सर्वनाम की माप-तोल संबंधी विशेषता बताने वाले शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-

(क) माता ने दो किलो दूध तथा थोड़ी-सी मिर्च मँगवाई।

(ख) बाजार से तीन मीटर कपड़ा तथा दो लीटर तेल ले आओ।

(द) सार्वनामिक विशेषण- जब कोई सर्वनाम विशेषण के रूप में प्रयोग किया जाता है, तो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे- वह लड़की गायिका है। जैसे- यह पुस्तक पढ़ लो।

(च) 1. मीठे – फल, आम

2. सातवाँ – अजूबा, जन्मदिन

3. लंबा – आदमी, कपड़ा

4. ऊँची – इमारत, दीवार

5. नया – कलम, कपड़ा

(छ)

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
1. सुंदर	इमारत	2. मोटा	हाथी
3. चालाक	लोमड़ी	4. नए	खिलौने
5. आकर्षक	वस्त्र		

अध्याय - 15 : क्रिया

(क) 1. (अ), 2. (ब), 3. (ब), 4. (द)।

(ख) 1. कर्म, 2. पाँच, 3. पूर्वकालिक, 4. संयुक्त, 5. सामान्य।

(ग) 1. ✓ 2. ✗ 3. ✓ 4. ✓ 5. ✗।

लिखित

(घ) 1. वाक्यों के जिस पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे 'क्रिया' कहते हैं।

2. **सकर्मक क्रिया :** जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता पड़ती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे- नैना पुस्तक पढ़ती है।, बालक निबंध लिखता है।

   अकर्मक क्रिया : जिस क्रिया का फल कर्म पर न पड़कर कर्ता पर पड़ता है अर्थात् जिस क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं होती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे-(अ) बालक हँसता है।, (ब) चिड़िया उड़ती है।, (स) बच्चा सोता है। तथा (द) घोड़ा दौड़ता है। उपर्युक्त वाक्यों में सभी क्रियाएँ बिना कर्म की हैं, इसीलिए ये सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

3. रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद होते हैं- (अ) सामान्य क्रिया, (ब) संयुक्त क्रिया, (स) प्रेरणार्थक क्रिया, (य) पूर्वकालिक क्रिया तथा (र) नामधातु क्रिया।

4. **प्रेरणार्थक क्रिया**- जिस वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे व्यक्ति को कार्य करने को प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे- (क) पिता ने पुत्र से पत्र पढ़वाया। (ख) सेठानी ने नौकरानी से कपड़े धुलवाए।

5. **नामधातु क्रिया**- धातु को छोड़कर संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों से बनी हुई क्रिया को नामधातु क्रिया कहते हैं।

   संज्ञा शब्दों से बनी क्रियाएँ- जैसे- हाथ = हथियाना लात = लतियाना
   शर्म = शर्माना गाँठ = गठियाना
   सर्वनाम शब्दों से बनी क्रियाएँ- जैसे-अपना = अपनाना रंग = रँगना
   विशेषण शब्दों से बनी क्रियाएँ- जैसे-
   गर्म = गर्माना हकला = हकलाना मोटा = मोटापा

विविध

निम्नलिखित में से अकर्मक क्रिया पर (✓) तथा सकर्मक क्रिया पर (✗) बनाइए-

1.	तैरना (✓)	सीना	खेलना (✗)	पढ़ना (✗)
2.	याद करना	बैठना (✓)	खाना	जागना (✓)
3.	हँसना (✓)	सुनना (✗)	आना (✓)	बनाना (✗)
4.	लिखना (✗)	चलना (✗)	लजाना	जीतना।

अध्याय - 16 : काल

(क) 1. (अ), 2. (स), 3. (ब), 4. (स)।

(ख) 1. भूतकाल, 2. संदिग्ध, 3. कार्य, भविष्यत्; 4. पूर्ण भूतकाल, 5. अपूर्ण वर्तमान।

(ग) निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं को रेखांकित कीजिए और उनके भेद एवं काल बताइए-

वाक्य	भेद	काल
1. वह मुंबई से आया था।	पूर्णभूत	भूतकाल
2. वह गीत गाता था।	पूर्णभूत	भूतकाल
3. शायद आज वर्षा हो।	संभाव्य भविष्यत्	भविष्यत्काल
4. रजत गया होगा।	संदिग्ध भूत	भूतकाल
5. आज वे मेला देखने जाएँगे।	सामान्य भविष्यत्	भविष्यत्काल
6. रवि नाच रहा है।	अपूर्ण वर्तमानकाल	वर्तमानकाल
7. यदि वर्षा होती, तो फसल न सूखती।	हेतु-हेतुमद् भूत	भूतकाल
8. दीपक कहानी लिख रहा है।	अपूर्ण वर्तमान	वर्तमानकाल
9. वह गीत गाता था।	पूर्ण भूत	भूतकाल
10. आज स्कूल खुला होगा।	संदिग्ध भूत	भूतकाल

लिखित

(घ) 1. क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं।

(अ) बच्चे विद्यालय जा रहे थे। (ब) बच्चे विद्यालय जा रहे हैं।

(स) बच्चे विद्यालय जाएँगे।

उपर्युक्त तीनों वाक्यों में क्रिया के अलग-अलग समय का पता चल रहा है। पहले वाक्य में क्रिया हो चुकी है। दूसरे वाक्य में क्रिया चल रही है तथा तीसरे वाक्य में क्रिया होगी।

2. काल के तीन भेद होते हैं- (अ) भूतकाल, (ब) वर्तमान काल तथा (स) भविष्यत् काल।

3. वर्तमान काल का अर्थ है- 'वह समय जो चल रहा है।' क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान में होने का पता चलता है, वह वर्तमान काल कहलाता है। जैसे-

(क) पिताजी अखबार पढ़ते हैं। (ख) माताजी बाजार जा रही हैं।

वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं-

(अ) सामान्य वर्तमान काल (ब) अपूर्ण वर्तमान काल (स) संदिग्ध वर्तमान काल

4. भविष्यत् काल के निम्नलिखित दो भेद होते हैं-

(अ) सामान्य भविष्यत् काल : क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य ढंग से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे-

(क) नानीजी कहानी सुनाएँगी। (ख) विवेक कपड़े खरीदेगा।

(ब) संभाव्य भविष्यत्- क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में क्रिया के होने की संभावना पाई जाये, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं। जैसे-

(क) शायद मेहमान आ जाएँ। (ख) शायद वर्षा हो जाए।

5. (*i*) वह कल मेरे घर आएगा।

(*ii*) कल परीक्षा हुई थी।

(*iii*) बगीचे में तितलियाँ उड़ रही है।

(*iv*) उसने अपना कार्य समाप्त कर लिया होगा।

(*v*) सभी ध्यानपूर्वक पढ़ रहे है।

विविध– स्वयं कीजिए।

अध्याय - 17 : अव्यय (अवकारी शब्द)

(क) 1. (ब), 2. (ब)।

(ख) 1. क्रिया, 2. चार।

लिखित

(ग) इनके उत्तर लिखिए-

1. वे शब्द जिनमें लिंग, वचन और काल की दृष्टि से कोई रूप परिवर्तन नहीं होता है, उन्हें अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं। इसके चार भेद है-
   क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चबोधक एवं विस्मयादिबोधक।
2. **क्रिया-विशेषण**- जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे-(क) घोड़ा तेज दौड़ रहा है। (ख) कछुआ धीरे-धीरे चलता है।
   उपर्युक्त वाक्यों में रंगीन शब्द क्रिया की रीति, समय, मात्रा तथा स्थान संबंधी जानकारी दे रहे हैं। अत: ये सभी शब्द क्रिया-विशेषण हैं।
   स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया की स्थान संबंधी जानकारी देते हैं, वे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।
   रीतिवाचक क्रिया-विशेषण- (क) वह अचानक आ गया।, (ख) रमन जोर-से बोलता है।, (ग) गीता जल्दी-जल्दी खाती है।, (घ) अक्षय चुपचाप चला गया। तथा (ङ) घड़ी धीरे-धीरे चलती है।
   परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण- (क) मेघालय में बहुत बारिश होती है।, (ख) कम बोलो, अधिक विचार करो।, (ग) थोड़ा खाओ, खूब पचाओ।,

(घ) अधिक मत खाओ। तथा (ङ) ज्यादा मत बोलो।

कालवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया के होने के समय का बोध कराते हैं, वे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहलाते हैं। जैसे- (क) बिजली अभी जाने वाली है। (ख) हम कल बाजार जाएँगे।

अध्याय - 18 : समुच्चयबोधक

(क) 1. (अ), 2. (अ), 3. (अ)।

(ख) 1. किंतु, 2. या, 3. क्योंकि, 4. समर्थन, 5. अन्यथा।

(ग) 1. चाहे = चाहे ये ले लो या फिर ये।

2. अथवा = प्रथम प्रश्न कीजिए अथवा दूसरा।

3. अन्यथा = परिश्रम करो, अन्यथा पछताना पड़ेगा।

4. ताकि = मैं उसके घर गया ताकि उसे साथ ले सकूँ।

5. क्योंकि = मैं वह परीक्षा न दे सका क्योंकि बीमार था।

6. बल्कि = वह स्वस्थ व परिश्रमी ही नहीं, बल्कि ईमानदार भी है।

7. और = रामायण और महाभारत महाकाव्य हैं।

8. तथापि = यद्यपि वह अमीर है, तथापि लालची है।

लिखित

1. जो अविकारी शब्द वाक्यों में प्रयुक्त विभिन्न पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें 'समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

   समुच्चयबोधक अव्यय के निम्नलिखित तीन भेद हैं :

   (अ) **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**-(क) मैं फुटबॉल और कबड्डी खेलता हूँ।

   (ख) राजीव तथा सुरेश कक्षा 7 में पढ़ते हैं।

   (ब) **व्यधिकरण समुच्चयबोधक**- (क) अध्यापक ने कहा कि तुरंत पुस्तक लाओ।

   (ख) मैं बहुत पढ़ रहा हूँ, ताकि अधिक अंक ला सकूँ।

   (स) **विकल्पसूचक समुच्चयबोधक**- (क) बाहर जाकर खेलो या चुपचाप बैठो।

   (ख) रमन अथवा विवेक में से कोई एक यहाँ आएगा।

2. **समानाधिकरण समुच्चयबोधक**- जो अव्यय दो या दो से अधिक समान शब्दों एवं उपवाक्यों को जोड़ता है, उसे समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। जैसे -

   (क) मैं फुटबॉल और कबड्डी खेलता हूँ।

   (ख) राजीव तथा सुरेश कक्षा 7 में पढ़ते हैं।

   इन वाक्यों में 'और', 'तथा' दो समान पदों या उपवाक्यों को जोड़ते हैं। ऐसे शब्द समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

3. **व्यधिकरण समुच्चयबोधक**- जो अव्यय किसी वाक्य के एक या अधिक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे - (क) अध्यापक ने कहा कि तुरंत पुस्तक लाओ। (ख) मैं बहुत पढ़ रहा हूँ, ताकि अधिक अंक ला सकूँ। इन वाक्यों में 'कि' तथा 'ताकि' शब्द दो ऐसे उपवाक्यों को जोड़ रहे हैं, जिनमें एक प्रधान उपवाक्य है और दूसरा आश्रित उपवाक्य है। ऐसे शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

विकल्पसूचक समुच्चयबोधक- जो अव्यय विकल्प का बोध कराते हैं, वे विकल्पसूचक समुच्चयबोधक कहलाते हैं। (क) बाहर जाकर खेलो या चुपचाप बैठो।, (ख) रमन अथवा विवेक में से कोई एक यहाँ आएगा।, (ग) उसके साथ तुम भी जाओ अन्यथा वह न जा सकेगा। इन वाक्यों में 'या', 'अथवा' व 'अन्यथा' विकल्प का बोध करा रहे हैं, अत: ये विकल्पसूचक समुच्चयबोधक हैं।

विविध

निम्नलिखित समुच्चयबोधक अव्ययों के भेद पर गोला बनाइए-

परंतु	=	समानाधिकरण	(व्यधिकरण)	विकल्पसूचक
या	=	समानाधिकरण	व्यधिकरण	(विकल्पसूचक)
तथा	=	(समानाधिकरण)	(व्यधिकरण)	विकल्पसूचक
क्योंकि	=	समानाधिकरण	(व्यधिकरण)	विकल्पसूचक
इसलिए	=	(समानाधिकरण)	व्यधिकरण	विकल्पसूचक

अध्याय - 19 : संबंधबोधक

(क) 1. के अंदर 2. के साथ 3. के पास 4. के बिना 5. के ऊपर

(ख) 1. सड़क के पास ट्रक खड़ा है।

2. के अंदर 3. की ओर 4. की अपेक्षा 5. के चारो

विविध- स्वयं करें।

अध्याय - 20 : विस्मयादिबोधक अव्यव

(क) 1. (द), 2. (स), 3. (ब), 4. (अ)।

(ख) 1. आह!, 2. अहा!, 3. शाबाश!, 4. अरे!, 5. बाप-रे-बाप, 6. छि!।

(ग) 1. हर्षबोधक = अहा! वाह!

2. आशीर्वादबोधक = चिरंजीव रहो! जीते रहो!

3. घृणाबोधक	=	हट्!	छि!
4. स्वीकृतिबोधक	=	अच्छा!	ठीक है!
5. भयबोधक	=	हैं!	ओह!

(घ) शाबाश! = शाबाश! तुमने तो कमाल कर दिया।

हाय! = हाय! यह क्या कर डाला?

वाह-वाह! = वाह-वाह! कितनी सुंदर गाड़ी है?

छि:! = छि:! कितनी गंदगी है?

हाँ-हाँ! = हाँ-हाँ कल आ जाना?

जीते रहो! = जीते रहो। तुम्हारा कल्याण हो।

अहा! = अहा! कितना सुंदर दृश्य है?

आहा! = आहा! कितना स्वादिष्ट भोजन है।

लिखित

(ङ) इनके उत्तर लिखिए-

1. जिन शब्दों के द्वारा हर्ष, शोक, विस्मय, दुख, ग्लानि, लज्जा आदि के भाव प्रकट होते हैं, वे विस्मयादिबोधक अव्यय कहलाते हैं।
2. विस्मयादिबोधक अव्यय के निम्नलिखित भेद 1. विस्मयादिबोधक, 2. हर्षबोधक, 3. शोकबोधक, 4. घृणाबोधक, 5. भयबोधक, 6. स्वीकृतिबोधक, 7. आशीर्वादबोधक, 8.संबोधनबोधक तथा 9. चेतावनीबोधक।

विविध

स्वयं कीजिए।

अध्याय - 21 : वाच्य

(क) 1. (अ), 2. (द), 3. (अ), 4. (ब)।

(ख) 1. कर्ता, 2. कर्मवाच्य, 3. प्रधानता, 4. अकर्मक।

(ग) 1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. कर्तृवाच्य, 4. भाववाच्य, 5. कर्तृवाच्य।

(घ) 1. रमन खा नहीं सकता।, 2. हम प्यास नहीं सह सकते।, 3. रवि बोल नहीं सकता।, 4. घोड़े दौड़ते हैं।, 5. बच्ची खेल रही है।, 6. सरकार उसे पुरस्कार देगी।

लिखित

(ङ) 1. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका प्रयोग कर्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार किया गया है, वह वाच्य कहलाता है। वाच्य के दो प्रकार हैं- कर्तृवाच्य एवं अकर्तृवाच्य।

2. **कर्तृवाच्य**- कर्तृवाच्य वाक्यों में क्रिया को करने वाला कर्ता प्रधान होता है और उसी के अनुसार क्रिया भी चलती है; जैसे-
(क) कविता नृत्य कर रही है। (ख) उसने दूध पी लिया। (ग) बच्चा रो रहा है।
3. **कर्मवाच्य**- इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया को करने वाले कर्ता और कर्म दोनों होते हैं, किंतु कर्म प्रधान होता है कर्ता नहीं, इसलिए कभी-कभी कर्ता का लोप भी हो जाता है; जैसे-(क) मेरे द्वारा खाना खाया जाता है। (ख) रेखा द्वारा फल खरीदे जा रहे हैं।
4. **भाववाच्य**- इस प्रकार के वाक्यों में कर्ता और कर्म दोनों अप्रधान होते हैं, इसलिए भाववाच्य केवल अकर्मक क्रिया का रूप होता है; जैसे-(क) उससे पढ़ा नहीं जाता। (ख) यहाँ सोया नहीं जाता।
   - भाववाच्य में कर्ता और कर्म की प्रधानता नहीं होती है।
   - इसमें मुख्यत: अकर्मक क्रिया का ही प्रयोग होता है।

विविध

(ङ) 1. भाववाच्य, 2. कर्तृवाच्य, 3. कर्मवाच्य
4. कर्तृवाच्य, 5. कर्मवाच्य, 6. भाववाच्य।

अध्याय - 22 : वाक्य-विचार

(क) 1. (अ) 2. (स) 3. (अ) 4. (ब)।

(ख)

	उद्देश्य	विधेय
1.	मैं	कक्षा 7 में पढ़ता हूँ।
2.	सूर्य	पूर्व दिशा में निकलता है।
3.	वह	प्रतिदिन विद्यालय जाता है।
4.	घोड़ा	दौड़ रहा है।
5.	उसने	खाना खा लिया है।
6.	रीता	कपड़े सिल रही है।

(ग) 1. सरल वाक्य - रवि एक अच्छा लड़का है।
2. संयुक्त वाक्य - रीता बोलती है और सुरेश लिखता है।
3. मिश्र वाक्य - अध्यापक ने पूछा कि तुम देर से क्यों आए?

लिखित

(घ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

1. (अ) उद्देश्य : वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उद्देश्य कहलाता है।

(ब) विधेय : उद्देश्य के बारे में जो कुछ भी कहा जाए, विधेय कहलाता है।
जैसे-(क) रवि स्कूल जाता है। (ख) मीता हँस रही है।
इन वाक्यों में 'रवि' और 'मीता' उद्देश्य हैं तथा 'स्कूल जाता है' और 'हँस रही है' विधेय हैं।

2. रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद हैं-
(क) **साधारण वाक्य**- रवि एक अच्छा लड़का है।
(ख) **मिश्रित वाक्य**- रीता बोलती है और सुरेश लिखता है।
(ग) **संयुक्त वाक्य**- मालूम होता है कि आज मेहमान आँएगे, जबकि हम बाहर जा रहे हैं।

3. (*i*) अध्यापक चले गए और सब खुश हो गए।
(*ii*) गाड़ी रुक गई और कुली अंदर आ गया।
(*iii*) मंत्री जी आते है और कार्यक्रम आरंभ हो गया।
(*iv*) कमरे में बच्चे बैठे है और वे हंस रहे हैं।
(*v*) सूर्य उगता है और बहुत आकर्षक लगता है।

अध्याय - 23 : विराम–चिह्न

(क) 1. (स), 2. (ब), 3. (द), 4. (ब)।

(ख) 1. (✗), 2. (✗), 3. (✓), 4. (✓), 5. (✓)।

(ग) निम्नलिखित विराम चिह्नों के सामने इनके नाम लिखिए :-

( )	=	कोष्ठक चिह्न
?	=	प्रश्नसूचक चिह्न
!	=	विस्मयादिसूचक चिह्न
:-	=	विवरण
-	=	योजक चिह्न
" "	=	दोहरा उद्धरण चिह्न
' '	=	इकहरा उद्धरण चिह्न

लिखित

(घ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. भावों और विचारों को स्पष्ट करने के लिए जिन निर्धारित चिह्नों का प्रयोग वाक्य के बीच या अंत में किया जाता है, उन्हें 'विराम-चिह्न' कहते हैं।
2. 1. पूर्ण विराम (।), 2. अल्प विराम (,), 3. अर्ध-विराम (;), 4. प्रश्न चिह्न (?),

5. विस्मयादिबोधक चिह्न (!), 6. योजक चिह्न (-),
7. उद्धरण चिह्न (‘’ , “ ”), 8. कोष्ठक (()), 9. लाघव चिह्न (०),
10. विवरण चिह्न (:-), 10. हंसपद चिह्न ( )।

3. अर्ध-विराम (;) - जहाँ अल्प-विराम की अपेक्षा कुछ अधिक रुकना होता है, वहाँ अर्ध-विराम चिह्न लगाया जाता है। जैसे- (क) वह बहुत हट्टा-कट्टा है; परंतु साहसी नहीं है। (ख) जो आज निर्धन है; कल वही धनी भी हो सकता है।
4. लाघव चिह्न का प्रयोग शब्द को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए किया जाता है; जैसे- (क) बैचलर ऑफ आर्ट- बी० ए० (ख) डॉ०-डॉक्टर।
5. उद्धरण चिह्न (‘ ’ , “ ”) : किसी व्यक्ति के मूल कथन को उद्धृत करने के लिए दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जबकि इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु, उपमान आदि को प्रकट करने के लिए किया जाता है।

(ङ) निम्नलिखित वाक्यों में उचित विराम-चिह्न लगाइए-

1. पं० नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे।
2. रवि, नेहा और बबीता स्कूल गए हैं।
3. तुम कौन सी पुस्तक पढ़ रहे हो?
4. प्रयत्नशील रहो, परिश्रम करो, सफलता तुम्हें अवश्य मिलेगी।
5. वाह! कितना सुंदर दृश्य है?
6. राष्ट्रपिता ‘महात्मा गाँधी’ भारत के महान नेता थे।
7. हमें पाप-पुण्य का ध्यान रखकर कर्म करने चाहिए।
8. लालबहादुर शास्त्री का नारा था- ‘‘जय जवान, जय किसान।’’
9. अव्यय के चार प्रकार हैं:- क्रिया विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक।
10. सुमित्रानंदन ‘पंत’ भारत के सुप्रसिद्ध कवि हैं।

विविध– स्वयं कीजिए।

अध्याय - 24 : मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) निम्नलिखित मुहावरों के सही अर्थ के सामने (✓) का चिह्न लगाइए-

आँख का तारा	= दूर होना	अत्यधिक प्रिय (✓)
ईद का चाँद होना	= बहुत कम दिखाई देना (✓)	सुंदर लगना
काया पलट होना	= पूर्ण परिवर्तन होना (✓)	पक्का दुश्मन होना

जान पर खेलना = तमाशा करना प्राणों की परवाह न करना (3)

पानी-पानी होना = लज्जित होना (3) पिघल जाना

(ख) मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

1. आसमान सिर पर टूट पड़ना (विपत्ति आना)- पिता की मृत्यु क्या हुई कि मदन के सिर पर आसमान टूट पड़ा।
2. कमर सीधी करना (आराम करना)- मैं बहुत अधिक थक गया हूँ, अत: मैं थोड़ी देर कमर सीधी कर लूँ और फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।
3. गागर में सागर भरना (थोड़े शब्दों में अधिक बात कहना)- बिहारी जी ने अपने छंदों में गागर में सागर भर दिया।
4. घाव पर नमक छिड़कना (दुखी को और दुखी करना)- फेल होने के कारण पीयूष पहले ही दुखी है। अब तुम व्यंग्य कसकर इसके घाव पर नमक छिड़क रहे हो।
5. ऊँट के मुँह में जीरा (बहुत कम होना)- सरकार विकास योजनाओं के लिए जो ध नराशि भेजती है, वह ऊँट के मुँह में जीरा जैसी सिद्ध होती है।

(ग) नीचे कुछ मुहावरे और उनके अर्थ दिए गए हैं। उपयुक्त मुहावरे का संबंधित अर्थ से मिलान कीजिए-

	मुहावरा	अर्थ
1.	आग में घी डालना	क्रोध को और बढ़ाना
2.	कान पकड़ना	गलती स्वीकार करना।
3.	नाम कमाना	यश प्राप्त करना।
4.	निन्यानवे के फेर में पड़ना	धन-संग्रह की चिंता होना।
5.	आसमान में उड़ना	घमंड होना।
6.	घाव हरा होना	भूला दु:ख याद आना।
7.	चकमा देना	धोखा देना।
8.	छठी का दूध याद आना	भारी संकट पड़ना
9.	खाक छानना	इधर-उधर भटकना।
10.	गाल बजाना	डींग मारना, अपनी बड़ाई करना।

(घ) निम्नलिखित लोकोक्तियों को पूरा कीजिए-

1. सावन हरे न भादो सूखे
2. जाकै पैर न फटी विवाई सो क्या जाने पीर पराई
3. हाथ कंगन को आरसी क्या पढ़े लिखे को फारसी क्या
4. एक अनार सौ बीमार
5. जैसा देश वैसा वेश

6. कौआ चला हंस की चाल
7. घर की मुर्गी दाल बराबर
8. आम के आम गुठलियों के दाम
9. अधजल गगरी छलकत जाय
10. खोदा पहाड़ निकली चुहिया

(ङ) निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

1. छोटा मुँह बड़ी बात (अपनी योग्यता से बढ़कर बातें कहना)- मैंने उमेश से साफ कह दिया है कि अपनी मर्यादा में रहा करो। छोटे मुँह बड़ी बात ठीक नहीं होती है।
2. एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा (एक तो वैसे ही बुरा हो, फिर उसकी सगंत भी अच्छी न हो)- संजय एक तरफ तो स्वभाव से ही बदतमीज है, दूसरे जिद्द पर और आ गया है, इसे कहते हैं एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।
3. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात (क्षणभर समय की खुशी मिलना)- फाँसी की सजा वाले कैदी को कुछ दिन फाँसी टल जाने से ये मत सोचो की जान बच गई उसकी तो चार दिन चाँदनी फिर अँधेरी रात।
4. आँख का अंधा नाम नैनसुख (अर्थ के विपरीत नाम)- उसका नाम तो है भोला लेकिन वह बड़ों-बड़ों के कान काटता है, इसीलिए कहा गया है-आँख का अंधा नाम नैनसुख।
5. जहाँ चाह वहाँ राह (इच्छा होने पर काम बन जाता है)- मयूर अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए दृढ रहा और अंत में उसे वांछित सफलता प्राप्त हो ही गई। सच ही कहा है कि जहाँ चाह वहाँ राह।

विविध

(क) ' आग' एवं 'आँख' से संबंधित दो-दो मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाइए।

1. आग में घी डालना (क्रोध को और अधिक बढ़ाना)- पांडवों के ऐश्वर्य को देखकर दुर्योधन का हृदय ईर्ष्या से जल-भुन उठा और उस पर द्रौपदी के व्यंग्य-बाणों ने आग में घी डाल दिया।
2. आग बबूला होना (क्रोधित होना)- सचिन की उल्टी-सीधी बातों को सुनकर उसके पिताजी आग बबूला हो गए।
3. आँख खुलना (भ्रम दूर होना)- उसकी आँख खुली तो सही, परंतु तब तक उसका सब कुछ लुट गया।
4. आँख का तारा (बहुत प्यारा)- रविकांत अपने वृद्ध माता-पिता की आँख का तारा है।

(ख) 'कमर' एवं 'क्रोध' से संबंधित दो-दो मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य लिखिए।

1. कमर कसना (तैयार होना)- यदि तुम चाहते हो कि सफलता तुम्हारे कदम चूमे, तो अभी से कठिन परिश्रम के लिए कमर कस लो।
2. कमर सीधी करना (आराम करना)- मैं बहुत अधिक थक गया हूँ, अत: मैं थोड़ी देर कमर सीधी कर लूँ और फिर मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।

(ग) 1. खाक छानना – इधर-उधर भटकना

2. कायापलट होना – पूर्ण परिवर्तन होना

3. आसमान में उड़ना – घमंड होना

4. ईद का चाँद होना – बहुत कम दिखाई देना

5. आस्तीन का साँप – कपटी और धोखेबाज़ मित्र

अध्याय - 25 : अपठित गद्यांश

गद्यांश-1

(क) संगठन में शक्ति।

(ख) सदस्य - किसी संस्था या देश से संबंध रखने वाला व्यक्ति

संगठन - मिला-जुला/एकता

कलह - झगड़ा

द्वेष - ईष्या

साक्षी - गवाह

अभाव - कमी

पराधीन - गुलाम

स्वतंत्रता संग्राम - आज़ादी की लड़ाई

बाल-बाँका - नुकसान करना

महाज्वाला - भीषण आग

स्वाहा - समाप्त होना

(ग) घर में फूट होने से कोई परिवार की इज्जत नहीं करता एवं देश में फूट पड़ने से या तो देश का विभाजन होता है या देश पराधीन हो जाता है।

(घ) एकता में बहुत बल होता है।

(ङ) देश हमारा घर है और हम इसके सदस्य है।

गद्यांश - 2

(क) भारत एक ग्राम-प्रधान देश है।

(ख) ग्रामवासियों का जीवन सरल व निष्कपट होता है।

(ग) ग्रामवासियों का।

(घ) गाँवों की जलवायु लाभप्रद होती है।

(ङ) ग्रामीण जीवन।

गद्यांश- 3

(क) भारतीय नारी।

(ख) तिलांजलि- हमेशा के लिए, त्याग देना, उत्थान - उठना, पतन-गिरना, संस्कृति-संस्कार

(ग) आज का नारी समाज जागृति फैला रहा है।

(घ) लेखक को भारतीय स्त्रियों की स्थिति देखकर उनके उत्थान या पतन का संदेह है।

(ङ) माता कस्तूरबा की मूर्ति स्त्रियों को संस्कृति का त्याग न करने की शिक्षा देती है।

गद्यांश - 4

(क) जनसंख्या वृद्धि की समस्या।

(ख) विश्वव्यापी - विश्व में फैला हुआ, अनियंत्रित - जो नियंत्रण में न हो
अवहेलना - अनदेखा करना, दृष्टि गोचर - आंखो के समक्ष

(ग) जनसंख्या वृद्धि विश्व व्यापी समस्या है।

(घ) हाँ

(ङ) जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रत्येक देश को अनेक कष्टों व विपत्तियों का सामना करना पड़ सकता है।

गद्यांश - 5

(क) आदर्श महापुरुष

(ख) जब हम अपनी तुलना महापुरुषों के जीवन से करते है तब हमें अपनी कमजोरियों का ज्ञात होता है।

(ग) सत्य, साहस, परिश्रम, ईमानदारी, सहिष्णुता आदि गुणों के कारण साधारण मनुष्य भी महान बन जाता है।

(घ) मनुष्य को अपने भीतर छिपी शक्तियों को पहचान कर महान बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

अपठित काव्यांश-3

1. कवि दूसरों की सहायता व भलाई के लिए जीवन दीप जलाना चाहता है।
2. सत्य का पालन करने के लिए रामचंद्र जी ने राजपाट त्याग दिया था।
3. श्री रामचंद्र ने सुख व वैभव का त्याग कर सादा जीवन व्यतीत किया। उन्होंने स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों के कष्टों का निवारण किया।

4. मानव का जीवन सीधा-सादा व दूसरों की भलाई के लिए काम आने वाला होना चाहिए।
5. लात मारना- त्याग देना।

काव्यांश 4

1. चिड़िया नया आवास रचाती है।
2. मानव दूसरों के लिए अपने प्राण न्यौछावर करते हैं, वे दूसरों के आँसू पोंछने का प्रयास करते हैं, परन्तु दानव दूसरों को रूलाते हैं, वे दूसरों के मार्ग में आग बिछाते हैं, खून-खराबा करते हैं एवं अंत में खुद भी जल जाते हैं।
3. जो व्यक्ति दूसरों की भलाई करने के लिए खुद मर-मिट जाते हैं वे नया इतिहास रचते हैं।
4. दुष्ट व्यक्ति दूसरों का बुरा करने के लिए उनकी राहों में आग बिछाते हैं एवं स्वयं भी नष्ट हो जाते है।
5. सुमन, पुष्प।

काव्यांश 5

1. भारतमाता को।
2. भारत में अरबों की संख्या में नागरिक रहते है, प्रत्येक नागरिक को भारतमाता की भुजा कहा गया है, इसीलिए एक अरब से अधिक भुजाओं वाली माता सबकी रक्षा करने में सक्षम है।
3. यहाँ की संस्कृति में विभिन्न भाषा, वेश, प्रदेश के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं।
4. अच्छे दिनों में भारतवासी एक साथ हँसते, गाते, सोते हैं।
5. भारत भूमि पर हरी-भरी प्रकृति व सामवेद का ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को प्रिय होता है इसीलिए भारतमाता भी सभी को भाती है।

अध्याय 26 से 30

शिक्षक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

ज्ञान सरोवर हिंदी व्याकरण

YELLOW BIRD PUBLICATIONS PVT. LTD.
EDUCATIONAL PUBLISHER

Regd. Off. : F-214, Laxmi Nagar, Delhi-110 092
Tel. : 91-11-4758 6784, 91-97116 18765
E-mail : yellowbirdpublications@gmail.com • info@yellowbirdpublications.com
Website : www.yellowbirdpublications.com